वक्रोक्ति सिद्धान्त

आचार्य कुन्तक (दसवीं शती)
ग्रन्थ - वक्रोक्ति जीवितम्

वक्र + उक्ति = वक्रोक्ति
टेढ़ा

शूद्रक - वक्रोक्ति निपुण (छठवीं शती)
भामह - अतिशयोक्ति अलंकार से वक्रोक्ति को
जोड़कर देखा।
दंडि ~~रुद्रट~~ - 1) स्वाभावोक्ति 2) वक्रोक्ति दो भागों में बाँटा है
* काव्य रूप से लिखते हैं
~~दंडि~~ -
स्वाभावोक्ति - जिस पदार्थ का गुण स्वभाव है

वामन :
सादृश्य लक्षणा वक्रोक्ति
सादृश्य - समान देखनेवाला
(मुख्यार्थ बाधा लक्षणा।
मुख्य अर्थ में जो बाधा उत्पन्न होता है
वो लक्षण है)
* रुद्रट :
1) काकु वक्रोक्ति
2) श्लेष वक्रोक्ति - ६

PAGE NO.:
DATE: / /

1) काकु वक्रोक्ति :
कंठ के द्वारा उत्पन्न बोलने की जो शैली मे वाक्य मे टेड़ापन होता है । उदा = मै नही खाऊंगा ? (सकता) (मक)

2) श्लेष वक्रोक्ति :
एक शब्द मे दो या तीन अर्थ छिपके रहते वो श्लेषवक्रोक्ति होता है

भोजराज :
ग्रंन्थ - सरस्वती कंठाभरण
वानमय वाङमय = पूरा साहित्य
वाङमय 3
1 वक्रोक्ति
2 रसोक्ति
3 स्वाभावोक्ति

कुंतक :

वैदग्ध्य भंगी भणिति
विचित्रता लिखने का शैली कथन
चातुर्यता
विचित्र प्रकार की वर्णन शैली ही वक्रोक्ति है
वक्रोक्ति को छः भागो मे विभाजित किया
Imp 1) वर्णविन्यास वक्रता
2) पद पूर्वार्ध वक्रता

3) पद परार्ध वक्रता
4) वाक्य वक्रता
5) प्रकरण वक्रता
6) प्रबन्ध

1) वर्णविन्यास वक्रता :
जहाँ वर्णो की आवृत्ती के आधार पर वक्रता हो वहाँ वर्णविन्यास वक्रता होता है
भेद
1) एक वर्ण की आवृत्ति
तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये

एक वर्ण के कारण विचित्रता उत्पन्न हुयी

2) दो वर्णे के आधार पर

नया - नया उत्साह कार्य मे उसे रहता था।
मृदु मंद - मंद मंथर - मंथर

3) रकार युक्त वर्णो की आवृत्ति

चित्र भी था चित्र और विचित्र भी है रह गया
चित्ररथ से सौमित्र मे
(लक्ष्मण)

र कार बार - बार उत्पन्न हो रही है पढ़ने मे विचित्रता हो रही है।

II पद पूर्वार्ध वक्रता :

पद के पूर्वार्ध पर आधारित वक्रता

1) रूढ़ि वैचित्र्य वक्रता
मेरा राम रमा है मुझमे
दशरथ के पुत्र से यहाँ मतलब नहीं है
यहाँ रूढ़ि से अपने मित्र को कहता है।

2) लिंग वै॰ पर्याय वक्रता
3) उपचार वक्रता
4) विशेषण वक्रता
5) समुद्र संवृत्ति वक्रता
6) वृत्ति वक्रता
7) लिंग वैचित्र्य वक्रता
8) क्रिया वैचित्र्य वक्रता

2) पर्याय वक्रता -
पर्याय अर्थ एक है लेकिन पर्याय शब्द अलग अलग होते है। हर एक जगह पर उसका भिन्न - भिन्न पर्याय शब्द से मतलब होता है। तभी उसमे वक्रता उत्पन्न होता है।

7) लिंग वैचित्र्य वक्रता :
काव्य मे स्त्रीलिंग और पुल्लिंग मे वक्रता वैचित्र्य होता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

III पद परार्द्ध वक्रता : पद मे प्रत्यय के कारण

1 काल वक्रता
2 कारक वक्रता
3 वचन वक्रता
4 पुरुष वक्रता
5 प्रत्यय वक्रता

IV वाक्य वक्रता - (वस्तु वक्रता) वाक्य के प्रयोग कौशल्य के कारण

उत्पन्न वक्रता
दो प्रकार
1) सहजा - किसी वस्तु का स्वाभाविक से वर्णन करना
2) वस्तु वक्रता - अलंकारों के प्रयोग कौशल्य से उत्पन्न वक्रता (आहार्य)

V (प्रसंग) प्रकरण वक्रता : प्रकरण से तात्पर्य है प्रबंध का एक अंग या कथा प्रसंग

प्रकार
1) पात्र - प्रवृत्ति की वक्रता (भावपूर्ण स्थिति व की उद्‌भावना)
2) उत्पादन लावण्य - (एक ही कथा मे नया नया चीज चमक जैसा - रामायण - वाल्मिकी उत्पादित करते है)
3) प्रबन्ध तथा प्रासंगिक कथाओं मे उपकार्य उपकारक भाव
4) आवृत्ति वक्रता

PAGE NO.:
DATE: / /

5) प्रकरण रस वक्रता
6) अवांतर वस्तु योजना (गौणकिन्तु सुंदर प्रसंग उद्भावना द्वारा प्रधान कथा वस्तु की सिद्धि)
7) गर्भांक - (नाटकशब्द) (प्रकरणान्तर की योजना)
8) विभिन्न प्रकरणों की परस्पर अन्विति

जैसे:
3) रामशक्ति पूजा - कथा मे राम का प्रमुख कथा के साथ अन्य हनुमान - जाम्बवंत कथा से उस कथा को उपकार मिलता है और भी कथा उससे मजबूत होता है।

4) आवृत्ति वक्रता:
कथा मे बार-बार नये वर्णन के साथ (रिके से) करना ही आवृत्ति वक्रता
जैसे - नागमती वियोग खण्ड - नागमती का विरह वेदना भिन्न-भिन्न रूप से वर्णन है।

5) नाटक कथा मे प्रसंग मे अलग-अलग रस होना चाहिए वहाँ प्रकरण रस वक्रता होता है।

6) अप्रदान - से प्रधान यहाँ मुख्य कथा को गौण कथा उपकार करती है और कथा को सिद्ध करती है।

7) प्रकरण का अंतर को जोडने वाला सूत्र है वो गर्भांक है।

DATE: / /

VI प्रबन्ध :

कवि कौशल्य होना चाहिए

1) मूल रस मे परिवर्तन
जैसे - रामशक्तिपूजा मे राम का पात्र शांत रस है
वैसेही साकेत काव्य मे नवम सर्ग मे उर्मिला का पात्र मे करुण रस है यानी मूल रस को परिवर्तन करना है

2) प्रकरण विशेष पर कथा समाप्ती - (समापन वक्रता)

3) कथा विछेद (अलग) वक्रता
मुख्य कथा को छोडकर अलग काम करना और मुख्य कथा को सीधे करना है।
जैसे:

4) प्रधान कथा का द्योतक नाम (नामकरण वक्रता)
मुख्य कथा के नाम से ही उस कथा कैसा है समझना है। प्रधान कथा का नामकरण द्योतक होना चाहिए।

5) एक विषय से संबद्ध विवरण प्रबंध वक्रता
एक कथा को अलग-अलग रूप से लिखना है और उसमे विलक्षण होता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

औचित्य सिद्धान्त

आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य विचार चर्चा
11वी सदी

उचित और अनुचित का भाव ही औचित्य है।
उचित से ही आत्मा जीवित रहता है
उचित का भाव ही औचित्य विचार है।
(क्या सही है सामाजिक के नियमानुसार कार्य करना ही उचित है)

* भरतमुनि :

1) जिस पात्र के लिए भूमिका मांग पात्र हो जो वैसी होनी चाहिए।

2) ~~जिस~~ अभिनेता का वेष आयु के अनुरूप और शारीरिक चेष्टाएँ वेष के अनुरूप होना चाहिए।

* भामह :

महाकाव्य लोक स्वाभाव युक्त होना चाहिए। लोक स्वाभाव ही औचित्य है, समाज के अनुरूप मे होना चाहिए।

* रुद्रट :

सबसे पहले औचित्य और अनौचित्य शब्द का प्रयोग करते है।
औचित्य को काव्य के लिए महत्वपूर्ण मानते है और अनौचित्य को दोष मानते है।

क्षेमेन्द्र 27 औचित्य बताये है

1) पद औचित्य (वाक्य मे उचित पद का प्रयोग होना चाहिए)
2) वाक्य - वाक्य मे नियम से संघटन होना चाहिए। क्रिया संज्ञा सर्वनाम विशेषण
3) प्रबंध - रस परिवर्तन
4) गुण
5) अलंकार
6) रस - रस प्रसंग के साथ होना चाहिए वो उचित है
7) क्रिया
8) कारक
9) लिंग
10) वचन
11) विशेषण
12) उपसर्ग
13) निपात
14) काल
15) देश
16) कुल
17) व्रत
18) तत्व
19) सत्व
20) अभिप्राय
21) स्वभाव
22) सारसंग्रह
23) प्रतिभा
24) अवस्था

25) विचार
26) नाम
27) आशीर्वाद